कक्षा- **10** जल संसाधन दिनांक- **15/07/21**

बहुउद्देशीय नदी परियोजनाएं और समन्वित जल संसाधन प्रबंध-

1-हमने प्राचीन काल से सिंचाई के लिए पत्थरों और मलबे से बांध जलाशय अथवा जिलों के तटबंध और नेहरू जैसे उत्कृष्ट जलीय कृतियां बनाई है इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि हमने यह परिपाटी आधुनिक भारत में भी जारी रखी है और अधिकतर नदियों के बेसिनो में बांध बनाए हैं|
2- ईसा से एक शताब्दी पहले इलाहाबाद के नजदीक श्रीगंवेरा में गंगा नदी की बाढ़ के जल को संरक्षित करने के लिए एक उत्कृष्ट जल संग्रहण तंत्र बनाया गया था|
3- चंद्रगुप्त मौर्य के समय वृहद स्तर पर बांध ,झील और सिंचाई तंत्रों का निर्माण करवाया गया|
4- कलिंग (उड़ीसा),नागार्जुनकोंडा (आंध्र प्रदेश), बेन्नूर(कर्नाटक)और कोल्हापुर(महाराष्ट्र) में उत्कृष्ट सिंचाई तंत्र होने के सबूत मिलते हैं|
5- अपने समय की सबसे बड़ी, कृत्रिम झीलों में से एक ,भोपाल झील 11वीं शताब्दी में बनाई गई|
6- 14 वीं शताब्दी में इल्तुतमिश ने दिल्ली में सिरी फोर्ट क्षेत्र में जल की सप्लाई के लिए हौज खास(एक विशिष्ट तालाब) बनवाया|
7- परंपरागत बांध, नदियों और वर्षा जल को इकट्ठा करके बाद में उसे खेतों की सिंचाई के लिए उपलब्ध करवाते थे| आजकल बांध सिर्फ सिंचाई के लिए नहीं बनाए जाते हैं उनका उद्देश्य विद्युत उत्पादन ,घरेलू और औद्योगिक उपयोग ,जल आपूर्ति नियंत्रण, मनोरंजन , आंतरिक नौचालन और मछली पालन भी है |इसीलिए बांधों को बहुउद्देशीय परियोजना भी कहा जाता है|
8- बहुउद्देशीय परियोजनाओं को उपनिवेश काल में देश को विकास और समृद्धि के रास्ते पर ले जाने वाले वाहन के रूप में देखा गया|
9- जवाहरलाल नेहरू गर्व से बांधों को “आधुनिक भारत के मंदिर” कहा करते थे| उनका मानना था कि इन परियोजनाओं के चलते कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था, औद्योगिकरण और नगरी अर्थव्यवस्था समन्वित रूप से विकास करेगी |